धर्म जीवन

जुलाई – अगस्त 2014

देव प्रभावों की सुगन्ध

उच्च लोक वासी श्रीमान प्रेमबल जी खेड़ा के जीवन की कुछ झलकियां।

धर्म जीवन

खण्ड 27 अंक 7 – 8
जुलाई – अगस्त – 2014
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

देव ज्योति में ही हमें अपनी उल्टी दृष्टि का बोध होता है।

(पी. वी. कनल)

मेरे भगवन्!

कुछ समय से मैं प्राय: प्रतिदिन अपने निज के साधन में 'मनुष्यात्मा के संबंध में चार महा तत्व' नामक अति मूल्यवान पुस्तक का पाठ करता रहा हूं। मैंने उस अध्याय का बार बार पाठ किया है जिसमें नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से उत्पन्न महा भयानक फलों का वर्णन है। इनमें से एक है उल्टी दृष्टि। यह फल उतना ही सच है जितना ही यह भयानक है। इस प्रकार के कुछ तजरुबे मैं अपने और दूसरों के जीवनों से नीचे लिखता हूं-

1. माता के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि

मेरी बहुत छोटी सी आयु में मेरे पिता जी का देहांत हो गया था। मेरी माताजी ने हमें पालने में बहुत संग्राम किया। आपकी अद्वितीय रोशनी प्राप्त करने से पहले मेरे दिल में विषैला विचार उठता था। वह यह था कि जब मैं अपने कमाए हुए पैसों से उनकी सहायता करता, तो मैं यह समझा करता कि मैं अपनी माता पर एहसान कर रहा हूं। आपकी रोशनी में मैं अनुभव करता हूं कि यह भाव कितना गलत था। मैं माता के ऋण को अपनी तुच्छ सी सेवाओं से कैसे उतार सकता था? उन पर कोई मेहरबानी करने का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। मुझे आपने एक भयानक उल्टी दृष्टि से बचा लिया।

जब मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता था तो मेरी माननीय माता जी को किसी दूर के स्थान में एक भारी बंडल ले जाना था। उन्होंने मुझे ऐसा करने के लिए कहा। बंडल उनके लिए बहुत भारी था और हमें अन्य कोई सहायता प्राप्त नहीं थी, इसलिए वह मुझे ले जाना पड़ा। लेकिन सारा रास्ता मैं उनके प्रति कठोर शब्द बोलता रहा और बड़बड़ाता रहा। इसका कारण यह नहीं था कि मैं बंडल उठा नहीं सकता था। इसका कारण तो यह था कि मैं समझता था कि मैं ऐसा काम करके लोगों की नज़रों में छोटा बन जाऊंगा। यह मेरी शोचनीय उल्टी दृष्टि थी। आपकी रोशनी से वंचित होने के कारण मैं नहीं देख सका कि मेरी माता को मदद की जरूरत है, वह माता जिसने मेरी इतनी बड़ी सेवा की है। मैं इस धोखे में रहता था कि सारे संसार की आंखें मेरी ओर लगी हुई हैं, मानों दुनिया को अन्य कोई काम ही नहीं। और यह मान भी लिया जाए कि लोग मेरी कल्पना के अनुसार ही सोचते होंगे, तो भी मैं कोई पाप तो नहीं कर रहा था। हाय! मेरी कैसी भयानक अवस्था कि मैं नीच दुनियांदारों की ओर से कुछ प्रशंसा के खोखले शब्द न मिलने के डर से अपनी माता की भी सहायता न करूं।

2. अध्यापकों के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि

जिस संगत में मैं रहता था, उसने मुझे यह सिखाया कि अध्यापकों का अपमान करना एक अच्छी बात है। जब मैं कालेज में गया, तो मुझे बताया गया कि कालेज का विद्यार्थी तो एक स्वतंत्र पक्षी है और उसे यह अधिकार है कि जो प्रोफेसर उसकी आज़ादी में दखल दे, उसे उसका मज़ा चखाए। मेरे भीतर यह विश्वास भरा गया कि जमात में प्रोफेसर की हंसी उड़ाना या उसकी पीठ पीछे उसका मखौल उड़ाना एक आज़ाद कालिजिएट की निशानी है। अपने दिनों में मैंने भी कुछ अध्यापकों का अपमान किया, उनकी आज्ञा के विरुद्ध हरकतें कीं और प्रोफेसरों का मखौल उड़ाने

में दूसरों का साथ दिया। अब यह सारी अवस्था मुझे एक भयानक उल्टी दृष्टि मालूम होती है।

आपकी देव ज्योति पाने के बाद कालेज में ही मेरा व्यवहार बदल गया। परन्तु बीते जीवन के दुखदाई धब्बे मेरी आत्मा पर वर्तमान हैं और मैं उन दिनों को याद करके रोता हूं जब मैं ऐसे विषाक्त प्रभावों से घिरा हुआ था। आपकी ही देव ज्योति में मुझे दिखाई दिया कि मेरे अध्यापक मेरे उपकारी थे। कालेज के दिनों में जब मुझे आपकी शरण मिल चुकी थी तो जिन अध्यापकों का मैंने अपमान किया था, उनमें एक वहां आए जहां मैं पढ़ता था। तब मैंने उनके सम्बन्ध में अपनी नीच गतियों का अपने उस समय की योग्यता के अनुसार यथा सामर्थ्य परिशोध किया। अध्यापक दंग रह गए और उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम्हारे अन्दर यह आश्चर्यजनक परिवर्तन कैसे आ गया? मैंने उन्हें देव समाज के द्वारा अपने जीवन में आए परिवर्तन की कथा सुनाई।

3. आत्मिक उपकारी के संबंध में दुश्चिन्ताएं

जब मेरे अंहकार के नीच अनुराग पर चोट लगती है तो मेरी निगाह उल्टी हो जाती है। मुझे श्री भाई साहिब भाई मोहन देव जी के सम्बन्ध में एक घटना याद है। यह बम्बई की बात है, जबकि मैं कालेज के वातावरण से विषाक्त था। मैं क्षुद्र प्रकार की बातें करने लगा। उन्हें इससे दुख हुआ और तनिक कड़े शब्दों में मुझे समझाया। इस पर मैं उल्ट पुल्ट हो गया। कम से कम उस समय के लिए उनके सब उपकार मैं भूल गया और मैं उनके सम्बन्ध में दुश्चिन्ताएं करने लगा। कैसी भयानक उल्टी दृष्टि! वह मेरे महान उपकारियों में से एक थे, जिन्होंने मुझे उस समय समझाया जब मैं ग़लत जा रहा था, परन्तु मैंने उन्हें उस समय मेरे साथ बहुत बड़ा अन्याय करने वाला अनुभव किया।

4. अपने दोषों को मानने के सम्बन्ध में उल्टे विश्वास

जब मैं अपनी पुरानी बिरादरी और पुराने सम्बन्धियों और सोसाइटी के वातावरण में सांस लेता था, तो एक और विषैली धारणा मेरे दिल में प्रवेश कर गई थी, जिसने अब तक भी मेरे दिमाग से अपना अधिकार पूर्ण रूप से नहीं छोड़ा। वह उल्टी धारणा यह थी कि जो मनुष्य जीवन में सफल होना चाहता है, उसे अपने आप को दुनिया के सामने ठीक ठाक प्रगट करना चाहिए, चाहे उसके आत्मा को विनाश के कीड़े खा रहे हों। जीवन का मंत्र यह बना हुआ था, "जो मन में आए करो, परन्तु कानून की पकड़ में आने से सावधान रहो।" आपकी ज्योति में यह विश्वास कितना भयानक प्रतीत होता है। आपकी ज्योति दिखाती है कि चाहे मुझे कोई न भी देखे, तो भी मेरा आत्मा प्रत्येक नीच भाव, विचार और कार्य से नीच बनता है, और सोसाइटी में मुझे केवल उसी स्थान या पद की इच्छा करनी चाहिए जिसका मैं अधिकारी हूं। ऐसे मान यश की भूख नहीं रखनी चाहिए जिसका कि मैं अधिकारी नहीं।

उपरोक्त दूषित प्रभावों ने जो मैंने पुरानी सोसाइटी से प्राप्त किए, मुझे लम्बे काल तक अपने दोषों को देखने और देखने पर उन्हें मान लेने के अयोग्य बनाए रखा। उन्होंने मेरे भीतर झूठी प्रशंसा और बड़ाई की लालसा भी पैदा कर दी, चाहे मैं उसका अधिकारी न भी हूं। कैसी उल्टी दृष्टि!

5. झूठा दिखावा

मेरे प्रान्त के बहुत से विद्यार्थी जब कभी अपने प्रान्त से बाहर जाते, तो अमीरों की न्याई ठाठ-बाठ से पहनते, खाना खाते और रहते-सहते, चाहे उस फिजूलखर्ची के कारण मां बाप को दुखी दिन

और बेचैन रातें काटनी पड़तीं। हमारे रहन सहन को देखकर वहां के विद्यार्थियों पर यह प्रभाव पड़ता कि यह राजकुमार हैं। हम अपने आपको बहुत बड़ा प्रगट करते। हमारे प्रान्त के एक भद्र पुरुष, जो प्रान्त के मुख्य नगर में रहते थे, हमारी ऐसी दशा को देखकर बड़े दुखी और निराश हुए और उन्होंने हमारा असली रूप दिखाते हुए एक पत्र अंग्रेजी दैनिक अखबार को लिखा। झूठी और बनावटी पोज़ीशन बनाए रखने की हानियों से बचाने की उनकी कोशिश का धन्यवाद करने के स्थान पर मैंने और दूसरे विद्यार्थियों ने उन्हें बुरा-भला कहा और उन पर झूठे इलज़ाम लगाए।

आपकी ज्योति ने इस सम्बन्ध में मेरे दृष्टिकोण को बहुत बदल दिया है और आपकी शक्ति से मैं किसी सीमा तक दूसरों के सामने अपने आपको झूठ मूठ बढ़िया दिखाने की आदत को छोड़ने के योग्य हो गया हूं।

एक दिन मैं ज़िला मैजिस्ट्रेट-जो देव समाज के सम्पर्क से प्राप्त उच्च चरित्र के कारण मेरा बड़ा मान करते थे-के सामने गया। उसने मुझे कहा कि तुम्हारी आय प्रति मास कम से कम एक हज़ार रुपए तो होगी। यह बात ठीक न थी। मैं आपके विकासकारी प्रभावों के अधीन आ चुका था, इसलिए मैं वहीं और उसी समय बताए बिना न रह सका कि ऐसा नहीं है। परन्तु जब मैंने अपनी आत्म-परीक्षा की तो मैंने देखा कि उसका ऊंचा अनुमान चाहे गलत था, परन्तु मुझे ऐसा सुनना सुखदायक लगा और उसे गलत बताने के लिए मुझे ज़ोर लगाना पड़ा। मेरे सामने एक भारी सचाई प्रगट हुई। एक बात बिल्कुल झूठी थी, इसने मुझे खुश किया, क्योंकि उससे मेरे प्रशंसा अनुराग की तृप्ति हुई। और जब मैंने इसे ठीक किया और मैं सचाई पर चल रहा था, तो मुझे इसके लिए दिल पर ज़ोर देना पड़ा। कैसी उल्टी दृष्टि!

6. जीवन के लक्ष्य के विषय में उल्टी दृष्टि

उल्टी दृष्टि की सबसे भयानक अवस्था जो मुझे आपकी रोशनी में दिखाई देती है, वह यह है कि मनुष्य गौण या साधन मात्र बनने वाली वस्तुओं को मुख्य वस्तु समझे और उन्हीं को अपने जीवन का लक्ष्य माने। आपकी ज्योति इस बात को स्पष्ट रूप से दिखाती है, कि धन तभी लाभदायक हो सकता है जब हम इसे भलाई और विकास में सहायक बना सकें। अन्यथा यदि हम उसे ही अपना लक्ष्य समझकर उसके पीछे दौड़ेंगे, तो यह हमें अपना दास बना लेगा और हमारा पतन करेगा। मेरे सन्मुख अनेक मनुष्यों के-कुछ देव समाज के सभासदों के भी-दृष्टान्त हैं जो आपकी ज्योति से वंचित हैं और जो धन को केवल धन के लिए प्यार करते और कीमती समझते हैं। उन्हें इसकी प्राप्ति से वही सुख मिलता है, जो एक शराबी को शराब का एक के बाद दूसरा प्याला चढ़ाकर मिलता है। उन्माद की अवस्था उन्हें बहुत अच्छी लगती है, यद्यपि उनके पास पहले ही शेष सारे जीवन को इज्जत से निर्वाह करने के लिए काफी धन है, परन्तु वह उसके नशे को तोड़ नहीं सकते। यदि वह धन दौलत की सनक छोड़ दें, और अपने आत्मा की भलाई का फिक्र करें, तो वह अपने और दूसरों के लिए बहुत हितकर प्रमाणित हो सकते हैं। परन्तु वह तब तक ऐसा नहीं कर सकते, जब तक आपकी ज्योति और शक्ति उनके भीतर प्रवेश करने का अवसर पाकर इस अंग में भी उनके भीतर शुभ परिवर्तन नहीं ला देती जैसा कि उनके जीवन के अन्य अंगों में उच्च परिवर्तन आया है।

वह आत्मा जो आपके देव प्रभावों के द्वारा

इस धन-मोह से उद्धार पा चुके हैं। जानते हैं कि एक समय था जब वह इस भयानक उल्टी दृष्टि के शिकार थे।

एक बड़े खानदान का एक नौजवान ग्रेजुएट डाक्टर बनना चाहता था। जब उसे डाक्टर बनने का कारण पूछा गया, तो उसने कहा "इसलिए कि लोग मेरी एक मूर्ति नगर के एक गेट के नजदीक खड़ी करें।" उससे प्रश्न किया गया कि लोग तुम्हारा बुत्त क्यों बनाएं? उसने उत्तर दिया कि मैं लोगों की सेवा करूंगा और दान दूंगा।

यह उल्टी दृष्टि की एक विचित्र घटना है। वह लोगों में नाम पाने के लिए दूसरों की सेवा करना और धन कमाना चाहता था। जीवन के लक्ष्य के विषय में कैसी उल्टी दृष्टि।

परन्तु आपकी शक्ति ने उसे बदल दिया और उसने धन कमाने वाले सब काम छोड़ दिए और अब वह वर्षों से देव समाज में मिशनरी के रूप में काम कर रहा है।

इस अंग में मेरी अपनी उल्टी दृष्टि भी बड़ी सीमा तक दूर हो गई है। मैंने भी हर अच्छे या बुरे ढंग से धन इकट्ठा करना अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया था, ताकि मैं ऊंचे सामाजिक सम्बन्ध और सांसारिक पदवी प्राप्त कर सकूं। जीवन के बारे में कैसा अन्धकार और कितना क्षुद्र लक्ष्य! आपने अपने देव प्रभाव संचार करके मेरी दृष्टि बदलने और मुझे बचाने की कृपा की।

आप की महान ज्योति में मैं देखता हूं कि मुझे उल्टी दृष्टि से बचाने के लिए आपकी देव ज्योति और आपके देव तेज से बढ़कर कोई चीज़ कारगर नहीं। दूसरे शब्दों में मेरी दृष्टि ठीक रखने के लिए आपके देव प्रभावों से बढ़कर किसी चीज़ पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मुझे कड़वा तजरुबा है कि जब मैं अपने ऊपर निर्भर करता हूं तो मेरी दृष्टि उल्टी हो जाती है और मैं जीवन का उच्च मार्ग देखने के अयोग्य हो जाता हूं। उच्च जीवन के श्रेष्ठ मार्ग को देखने और उस पर चलने के बिना मैं सुरक्षित नहीं। मैं महसूस करता हूं कि जब मेरे हृदय पर आपका सबसे बढ़कर अधिकार होगा और केवल आपके देव रूप की ओर मेरा दिल आकृष्ट होगा, तब मेरी जीवन यात्रा सबसे बढ़कर सफल होगी।

काश! यह अति कंगाल और तुच्छ हृदय आपके अद्वितीय देव प्रभावों को ग्रहण करे और इस संसार के पतनकारी प्रभावों से अपनी रक्षा कर सके।

बाकी शेष पेज 20 का

है। भला परिवर्तन देव प्रभावों द्वारा होता है। सभापति जी ने श्रद्धा से भरकर परिशोध की घटनाएं बताई, वातावरण बहुत प्रभावशाली बन गया था।

26.3.2014, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि दुनियां के सब पदार्थ पाकर भी हमारे हृदय का अन्धेरा दूर नहीं होता। आत्मा जो सबसे कीमती चीज़ है, जिसके प्रति हम अन्धकार में हैं। विनाशकारी शक्तियों से बचे बिना आत्मा नाश से नहीं बचता। बहुत से नीच भावों का ज़िकर किया और बताया कि They are good servants but bad masters. दूसरा हमारी आत्मिक भले के लिए विकास के लिए दूसरों के काम आना आवश्यक है। श्रीमान मुरारी लाल जी ने खुशी में पेड़े बांटे और बलबहादुर जी के गले मिलकर कितनी देर रोते रहे। 2280 रु० दान प्राप्त हुआ।

(एक सेवक)

झूठ आत्मा के लिए पतनकारी है

हे भगवन!

आपके देव प्रभावों से परे मनुष्य आत्मा के लिए कहीं भी रक्षा नहीं है। प्रत्येक आत्मा के लिए आपकी ज्योति नितान्त अनिवार्य है। इस अद्वितीय ज्योति के बिना कोई अपने आत्मा का ठीक ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। परन्तु जब आपकी ज्योति हमारे आत्मा में प्रवेश करती है और हम एक ओर अपना रूप देखते और दूसरी ओर आपके रूप के दर्शन करते हैं, तो यह पुकारने के लिए विवश हो जाते हैं कि, "हे सत्यदेव! आपके बिना हमारा कहीं ठिकाना नहीं।" मुझे इसका बोध हो गया है। मैंने देखा है कि मेरे अपने भाव तो मेरे आत्मा में अन्धकार उपजाने का महा भयानक मैलान या स्वभाव रखते हैं। मेरे अधिकतर भाव नीच अनुराग और नीच घृणाएं हैं, और यदि कोई ऐसे भाव हैं भी, कि जिन्हें उच्च या सात्विक कहा जा सकता है, तो उनमें ऐसी सामर्थ्य नहीं कि वह मुझे आत्मा का रूप और उसकी अवस्था दिखा सकें तथा मुझे सचाई और भलाई की ओर ले जा सकें। इसके विपरीत वह मुझे जोर से झूठ की तरफ घसीटते हैं। मैंने आपकी ज्योति में देखा है कि असत्य की ओर ले जाने वाली मेरी आत्मा की प्रत्येक गति मेरे लिए पतनकारी है। असत्य आखिर असत्य है और मेरे आत्मिक जीवन को नीचे गिराने वाला है। आपकी ज्योति झूठ का भयानक रूप दिखाती है। आपकी यह ज्योति मुझे ऐसे ही स्पष्ट रूप से जैसे कि मैं बाहर की वस्तुओं को बाहर की आंखों से देखता हूं, यह दिखाती है कि असत्य का व्यवहार चाहे किसी भी लक्ष्य के लिए हो, वह मेरे आत्मा के बल को घटाता और उसे मृत्यु की ओर ले जाता है। मैं स्पष्ट रूप से देखता हूं कि यही (असत्य) अस्तित्व का ही कुछ मूल्य नहीं रहने देता। जो अस्तित्व झूठ में रस लेता है, वह कूड़े करकट पर जीता है और उसकी अवस्था बहुत शोचनीय है।

इस प्रकार आपने मुझे असत्य का असली - काला, भयानक और पतनकारी - रूप दिखाया है। इसलिए मेरी आपके चरणों में यह व्याकुलता पूर्वक प्रार्थना है कि चूँकि मेरी अपनी अवस्था ऐसी कृपापात्र है, इसलिये मैं आपके चरणों से अधिक लिपटता जाऊं, ताकि झूठ की ओर ले जाने वाली रुचियों से मेरा उद्धार हो।

आपका अस्तित्व कैसा परम सुन्दर! मानवता के लिए यह कैसा वरदान है कि आप इस पृथ्वी में आविर्भूत हो गए। जब मैं चारों ओर देखता हूं कि कहलाने वाले पैग़म्बरों ने या सम्प्रदायों के संस्थापकों ने और तथाकथित देवतों और देवियों ने असत्य को अपनाया है, और कहलाने वाली धार्मिक पुस्तकों में जिन्हें लाखों करोड़ों मनुष्य पढ़ते हैं, बच्चे की सी कल्पनाएं और झूठ और पाप की शिक्षा भरी पड़ी है, और धार्मिक कहलाने वाले कई सम्प्रदाय भी धोखे और कपटता को बड़ा सदगुण मानते हैं, और नाना मनुष्यों के साथ अपने व्यवहार में बिना किसी लज्जा के झूठ के खोटे सिक्के का प्रयोग करते हैं, तो मैं इसको एक अत्यन्त विस्मय जनक घटना समझता हूं कि सत्य और शुभ के पूर्णांग प्रेमक देवात्मा इस पृथ्वी में प्रकट हो गए, और मुझे उनकी शरण में आने का महा अधिकार प्राप्त हो गया। मेरे भगवन! ऐसा आर्शीवाद प्रदान करें कि मैं यह सौभाग्य पाकर उन महान ख़ज़ानों को प्राप्त कर सकूँ जो आपके देव प्रभाव प्रदान करते हैं। मुझे यह आर्शीवाद दीजिए कि मैं असत्य को घृणा करने के योग्य होता जाऊं और भिक्षुक बनकर आपका ऐसा बल पा सकूँ कि जिसे पाकर मैं सत्य का साथ दे सकूँ और अपने आत्मा का निर्माण और उसे विकसित कर सकूँ कि जो संसार में हमारे लिए सब लाभों से बढ़कर लाभ है।

श्रीमान साधु जानकी दास जी

(पी. वी. कनल)

श्रीमान साधु जानकी दास जी को हमारे प्राय: सब ही पाठकगण जानते हैं। मेरे और मेरे पारिवारिक जनों के वह विशेष उपकारी थे। मैं उनकी शूरवीरता के लिए हमेशा ही उनका श्रद्धावान रहा हूं। किसी अच्छे काम को हाथ में लेकर वह जिस प्रकार उसके लिए भेंट चढ़ जाते थे, और अपने कर्त्तव्य भाव से परिचालित होकर जिस सुन्दर से सुन्दर रूप में उसको पूरा करना चाहते थे, वह उनका ही काम था। वह सरल थे, वह भीतर और बाहर से एक थे। औरों से सेवा लेने के कभी आकांक्षी नहीं रहते थे। अगर किसी से वह कभी थोड़ी बहुत सेवा लेते थे, तो वह उसकी चार गुणा सेवा करके तृप्ति पाते थे। किसी जन ने यदि उन्हें रेल गाड़ी में थोड़ी सी मदद दी, तो उन्होंने जब तक उनके पास किसी चीज़ का पार्सल नहीं भेज दिया, तब तक चैन नहीं पाया। यूं ही किसी से दबने वाले नहीं थे, परन्तु यूं ही किसी से अड़ने वाले भी नहीं थे। जब अपनी गल्ती देखते थे, तो उस का परिशोध करने के लिए जितना अपने आपको कोसते और उत्पीड़ित जन के सम्बन्ध में जिस कदर क्षमा प्रार्थना के भावों से भर जाते थे, उसका हितकर दृश्य एक-एक समय में मेरे हृदय पर बहुत गहरा असर करता रहा है। श्रीमान साधु जी विशेष कर्मचारियों की मंडली में से एक विशेष कर्मचारी थे। उनके जीवन से कई ऐसे शुभकर कार्य हुए हैं, कि जिनकी बदौलत ही वह देव समाज के इतिहास में सदा ही विशेष रूप से स्मरण किए जाएंगे।

1. **<u>देव समाज स्वर्ण जुबिली महोत्सव के शानदार जलूस के शानदार जरनैल।</u>**

देव समाज के परम पूजनीय संस्थापक भगवान देवात्मा के 87 वें जन्म महोत्सव के उपलक्ष्य में जो वार्षिक महोत्सव हुआ था, उस शुभ अवसर पर देव समाज का स्वर्ण जुबिली उत्सव भी मनाया गया था। उस स्वर्ण जुबिली के उपलक्ष्य में पंजाब की राजधानी लाहौर में एक बहुत बड़े जलूस का प्रबन्ध कर्ता व नेता कौन हो?तब सब की निगाह जिस शूरवीर की तरफ गई, वह श्रीमान साधु जानकीदास दास जी थे। उन्होंने स्वयं यह पदवी चाहकर या मांगकर नहीं ली थी। लेकिन इस महोत्सव के प्रबन्धकर्त्ताओं ने ही इस बहुत कठिन और विशेष काम के लिए उनको नियत किया। उन्होंने तुरन्त इसको कामयाब बनाने के लिए असाधारण संग्राम करना शुरू कर दिया। श्री देव गुरु भगवान मेमोरियल मन्दिर (लाहौर) का जुबिली गेट उनके संग्रामों का एक बाह्यक चिन्ह है। कई तो उन्होंने बहुत सुन्दर बोर्ड बनवाए कि जो जुबिली महोत्सव और भगवान देवात्मा की अधिकारी दिलों पर विजय पाने की घोषणा करते थे। सारे जलूस के जिस भाग ने क्या सामाजिक जनों और क्या जनता के दिलों पर विशेष असर किया, वह जलूस का वह भाग था कि जहां पर एक शानदान फिटन में भगवान देवात्मा की निहायत सुन्दर छवि सुन्दर छत्र के नीचे सुन्दर फूलों के हारों से सुसज्जित की गई थी। फिटन जलूस के साथ चल रही थी। भगवान देवात्मा की छवि के दस Bodyguard थे, जो अपनी ज़रक-बरक पोशाक पहने हुए घोड़ों पर सवार होकर जा रहे थे। जलूस के जिस दूसरे भाग ने जनता और हमारे सामाजिक जनों पर खास असर किया, वह यह था, कि एक सजी हुई मोटर कार में विशेष सन्मान और श्रद्धा के योग्य श्रीमति माता पूजनीया जी दो भद्र स्त्रियों सहित सवार थीं, और इस मोटरकार के पीछे कन्याओं और स्त्रियों की कतारें

थी, जो बहुत मधुर स्वर में गीत गा रही थीं। इस जलूस के सम्बन्ध में हमारे साप्ताहिक पत्र 'सत्य देव संवाद' में निम्नलिखित पंक्तियां दर्ज हैं-

"यह जलूस जैसा शानदार था और जिस कदर खूबसूरत शक्ल को पेश करता था, और जिस आला दर्जे की बाकायदगी और प्रबन्ध के साथ जा रहा था, उसे देख-देखकर लोग हैरान रह जाते थे, और कितने ही जन, क्या स्त्री क्या पुरुष-जहां इस जलूस के द्वारा देव समाज की आश्चर्यजनक उन्नति को मालूम करके अपनी हैरानी का प्रकाश करते सुने गए, वहां वह उसके उच्च प्रभावों से भी बहुत प्रभावित होते देखे जाते थे। ऐसा भी देखने में आया, कि कई जन भगवान देवात्मा को छवि के द्वारा उनके अत्यन्त शक्तिशाली और उच्च प्रभावदायक रूप के दर्शन करके अपने सन्मान वा श्रद्धा के प्रकाश में झुककर प्रणाम करते थे।"

मैं स्वयं भी इस जूलस में शामिल था। जगह-जगह मैंने भी इस में तकरीरें की थीं। और मेरे हृदय में भी साधु जानकी दास जी के लिए श्रद्धा का भाव उत्पन्न हुआ था।

2. भगवान देवात्मा के अनोखे सेक्रेट्री

मैं 20 जनवरी 1917 को सिन्ध त्याग कर लाहौर में भगवान देवात्मा के चरणों में पहुंच गया था। मैं अक्तूबर सन् 1924 से लेकर अप्रैल 1929 (जब भगवान देवात्मा परलोक को सिधारे) भगवान देवात्मा के चरणों रहा। सन् 1917 से लेकर सन् 1929 तक श्रीमान साधु जानकी दास जी मेरे सामने भगवान देवात्मा के सेक्रेट्री रहे। कई बार भगवान देवात्मा अपनी देव वाणी में प्रकाश करते, कि श्रीमान जानकी दास जी से पहले मुझे ऐसा कोई काबिल सेक्रेट्री नहीं मिला।

श्रीमान साधु जानकी दास जी एक टांग रखते थे। दूसरी लकड़ी की उनकी मसनूई टांग थी। मसनूई (बनावटी) टांग रखने वाले जन जब सोते हैं, तो रात को उसको उतार कर रख लेते हैं, क्योंकि साथ लेकर सोने में विघ्न उत्पन्न होता है। परन्तु श्रीमान साधु जानकी दास जी जितने वर्ष और जितने वक्त भगवान देवात्मा के चरणों में रहे, उन्होंने केवल इस पवित्र विचार को सन्मुख रखकर रात को अपनी टांग कभी नहीं उतारी थी कि अगर भगवान देवात्मा कभी बुलाएं, तो उन तक पहुंचने में उनको देरी न हो। भगवान देवात्मा के साथ जब नहीं होते थे तो रात को टांग उतार देते थे। जब उनके साथ होते थे, तब कभी नहीं उतारते थे। क्या यह विचित्र घटना नहीं?क्या यह एक शिष्य का अपने गुरु के सम्बन्ध में त्याग का निराला दृष्टान्त नहीं?केवल इतना ही नहीं, किन्तु मैंने देखा है कि कई बार ऐसे समय भी आए, कि श्रीमान साधु जानकी दास जी को 104 डिग्री तक बुखार हो गया, परन्तु उन्होंने पूजनीय भगवान को इसका पता तक नहीं दिया, ताकि भगवान देवात्मा उन्हें लेटने को न कह दें और उनको अपने देवात्मा गुरु की सेवा के श्रेष्ठ अधिकार से वंचित न होना पड़े।

श्रीमान साधु जी इस बात के लिए बहुत खबरदार और फिकरमन्द रहते थे कि भगवान देवात्मा को किसी बात से अनुचित दुख और कष्ट न पहुंचे। एक बार भगवान देवात्मा श्रीमान साधु जानकी दास जी को सोलन अपने साथ नहीं ले गए थे। उन्हें लाहौर में आवश्यक काम का विचार करके छोड़ गए थे। और कामों के भिन्न साधु जी का यह काम भी था, कि वह भगवान देवात्मा के गरम कपड़ों को कभी-कभी निकाल कर हवा लगाते रहें, ताकि उन्हें कीड़ा न लग जाए। एक दिन जब श्री साधु जी ने भगवान देवात्मा के गरम कपड़े बाहर निकाले, तब उन्हें मालूम हुआ, कि भगवान देवात्मा के गर्म चादरों के जोड़े को कीड़े ने हानि पहुंचाई है। साधु जी इस बात का बोध रखते

थे कि भगवान देवात्मा को किसी की गफ़लत से किसी वस्तु का थोड़ा सा नुकसान भी बहुत तकलीफ देह मालूम होता था। वह जीवन दाता होकर हरेक सम्बन्धित वस्तु या अस्तित्व की आयु को बढ़ाना चाहते थे। विकास तत्व के पूर्ण बोधी और सहायक होकर वह प्रत्येक सम्बन्धित वस्तु या अस्तित्व का विकास ही चाहते थे। उसका विनाश बरदाश्त नहीं कर सकते थे। भगवान देवात्मा को इस अनुचित दुःख से बचाने के निमित्त श्रीमान साधु जी ने अपने पैसों से गर्म चादरों का एक जोड़ा प्रायः उसी रंगत का खरीद कर वहां रख दिया और ऐसा करके ही तृप्ति लाभ की। ऐसी कई घटनाएं उनके जीवन से पैदा होती रहती थीं। वह सदा ही अपने सत्य देव भगवान देवात्मा की सच्ची प्रसन्नता लाभ करने और उन्हें अनुचित दुख से बचाने के लिए अपनी कुल शक्तियों और अपने कुल पैसों को न्योछावर करना अपना महा सौभाग्य और श्रेष्ठ अधिकार बोध करते थे।

मैंने कई बार श्री साधु जी को रात के बारह बजे तक दफ्तर में काम करते देखा है। वह इसलिए कि प्रातः काल भगवान देवात्मा की सेवा में किसी पुस्तक के प्रूफ और उनकी दी हुई अन्य आवश्यक हिदायतों को पूरा करके समय पर पेश कर सकें। अपने जीवन के लगातार इस दृष्टान्त से श्रीमान साधु जी ने भगवान देवात्मा के देव हृदय पर यह विश्वास बैठा दिया था कि श्रीमान् साधु जी के जिम्मे जो भी काम लगाया जाएगा वह सिवाए किसी विशेष कारण के अवश्य समय से पहले पूरा हो जाएगा। श्रीमान साधु जी के ऐसे बहुत परिश्रमी, कर्त्तव्य बोधी और विश्वास के पात्र जीवन को देखकर ही भगवान देवात्मा ने फरमाया था, कि पहली जंग (अर्थात् जो सन् 1914 से आरम्भ हुई थी) ब्रिटिश गवर्नमेन्ट को प्रधान मन्त्री एसक्विथ की जरूरत नहीं थी, बल्कि लॉयडजार्ज की जरूरत थी। इसी तरह मुझे भी उस वक्त श्रीमान जानकी दास जी की जरूरत थी।

3. **<u>भगवान देवात्मा से सम्बन्धित चार पवित्र स्थानों के सौंदर्य और उनकी शोभा को बढ़ाना।</u>**

भगवान देवात्मा से सम्बन्धित चार स्थान ऐसे हैं जो निहायत ही पवित्र और पूजनीय हैं। अर्थात् (1) भगवान देवात्मा का जन्म स्थान श्री अकबरपुर (2) भगवान देवात्मा का अन्तिम निवास स्थान देवालय, लाहौर (3) भगवान देवात्मा की यादगार में उनके इस पृथ्वी में विराजमान होने के दिनों मैं लाहौर में जो श्री देव गुरु भगवान मेमोरियल मन्दिर बनाया गया था (4) पर्वताश्रम सोलन, जहां बरसों तक भगवान देवात्मा ने गर्मी के दिनों में बहुत सा नया और अद्वितीय साहित्य पैदा किया।

मैं सन् 1941 में गर्मियों की छुट्टियों के दिनों में पर्वताश्रम सोलन पहुंचा। मैंने पहली बार पर्वताश्रम के बाह्य रूप को देखकर बार-बार उस हस्ती अर्थात् श्रीमान साधु जानकी दास जी को प्रणाम किया कि जिन्होंने अपनी हिम्मत और बहुत कुर्बानी से उसकी काया पलट दी और उसे नया और सुन्दर रूप दे दिया। इसी मन्दिर के मैंने दो बहुत बड़े दरवाजे देखे, जो अत्यन्त शानदार हैं। एक दरवाजा सड़क पर है, दूसरा मन्दिर के साथ। पक्की सीढियां बनाई गई हैं और मन्दिर का बहुत बड़ा सेहन पक्का बना दिया गया है। सेहन में बहुत सी सुन्दर क्यारियां बना कर फूलदार पौधों और सरु के पौधे लगाए गए हैं जो अजीब किस्म की शोभा दे रहे हैं। बैठने वालों के लिए सुन्दर बैंच रखे गए हैं। बहुत से बाहर के स्त्री पुरुष हर साल दर्शन के लिए आते हैं। जो आता है, वह इस सुन्दर स्थान के गुण गाता नहीं थकता। एक-एक जन का दिल इस स्थान को छोड़कर जाने को नहीं करता। मेरे एक मित्र रिटायर्ड डिप्टी कमिश्नर कुछ दिनों के लिए मेरे पास

आकर ठहरे। वह सन् 1930 में भी एक बार इस स्थान पर आकर ठहरे थे। ज्योंही उन्होंने वर्तमान मन्दिर का पक्का फर्श, नया बाग और सौंदर्य और शोभा को देखा, तो बेबस होकर कहने लगे कि मुबारिक हैं आप लोग कि जिन्होंने इस स्थान की शोभा और इसके सौंदर्य को इस कदर बढ़ा दिया है। मैंने उनको कहा, कि यह तो हमारे एक ही माननीय धर्म सम्बन्धी के परिश्रम और त्याग का फल है कि जिनका नाम श्रीमान साधु जानकी दास जी है। मुबारिक हैं साधु जानकी दास जी, जिन्होंने भगवान देवात्मा के निवास स्थान की इस कदर शोभा बढ़ा दी।

इसी प्रकार श्री देव गुरु भगवान मेमोरियल मन्दिर को बाह्यक रूप से सुन्दर और पवित्र बनाने वाले श्रीमान साधु जानकी दास जी हैं। भगवान देवात्मा के परलोक गमन करने के कई सालों बाद तक इस मन्दिर का बाह्यक रूप बहुत दुखप्रद रहा है। कर्मचारी निवास और मेमोरियल मन्दिर के बीच में जो सेहन था, उसका बुरा हाल था। स्त्री पुरुष और बच्चे वहीं बैठे रहते थे और छाबड़ी वाले वहां आते थे। उनसे चीज़ें लेकर और छिलके फेंक कर सेहन को कुत्सित बनाते थे। सारा दिन चारपाईयां बिछी रहती थीं। बच्चों के छोटे कमोड़ पड़े रहते थे। श्रीमान साधु जानकी दास जी, जो 11 साल से मुरादाबाद यू.पी. में रहे थे, जब लाहौर तशरीफ लाए तो उसको देखकर उनके दिल पर बहुत बड़ी चोट लगी। और उन्होंने इस अवस्था को बदलना चाहा। जानने वाले जानते हैं, कि उनको किन-किन मुसीबतों का सामना करना पड़ा। उन्होंने पहला सारा कुत्सित रूप बदल दिया। बहुत सुन्दर क्यारियां और घास के प्लाट बना दिए। सुन्दर फूल और फलदार वृक्षों का बाग लगवाया और सारे स्थान को नया, सुन्दर और पवित्र रूप दे दिया। एक बार एक बहुत बड़े हाई स्कूल के हैड मास्टर और ईश्वर परस्त सोसायटी के अच्छे-अच्छे जन मुझे मिलने के लिए आए। मैं श्रीमान साधु जी के बनाए हुए घास के प्लाट में बैठा हुआ था। वह बैठने के साथ ही कहने लगे के मैं कई वर्षों के बाद यहां पर आया हूं। यह जादू किसने करके दिखाया है। मैंने श्रीमान साधु जानकीदास जी का नाम लिया। वह कहने लगे तब तो उन्होंने आप लोगों की बहुत बड़ी सेवा की है। इसी प्रकार भगवान देवात्मा के निवास स्थान देवालय और समाधि को नया रंग और रूप देने में श्री साधु जी ने असाधारण संग्राम किया। जगह-जगह फिर कर इस कार्य के लिए सैकड़ों और हजारों रुपए दान में लाए।

भगवान देवात्मा का जन्म स्थान अकबरपुर जिला कानपुर में है। भगवान देवात्मा के सैंकड़ों सेवकों ने इस पवित्र स्थान के दर्शन भी नहीं किए। इस पवित्र स्थान को नया और सुन्दर रूप देने का दर्द किस के भीतर पैदा हुआ?बार-बार श्री अकबरपुर पहुंच कर वहां मन्दिर बनाने और छोटा सा बाग लगाने में किस ने संग्राम किया?वहां कुआं किस ने लगवाया?बार-बार वहां जाकर उसकी देखभाल और जरूरी मरम्मत किस ने कराई? श्रीमान साधु जानकी दास जी ने इस अनोखी सेवा से क्या इस वक्त के सामाजिक जनों और क्या आने वाली नसलों पर जो उपकार किया है, उस उपकार का सच्चा फल उनको हमेशा मिलता रहेगा। और सारी देव समाज उनकी इस स्मरणीय सेवा को सामने लाकर उनको धन्यवाद देती रहेगी।

4. **<u>एक असाधारण हमदर्द हस्ती</u>**

मैं एक बार मुरादाबाद गया था। श्री साधु जी के पास जाकर ठहरा था। मेरा खाने का प्रबन्ध श्री साधु जी ने एक सेवक के घर पर किया था, जिनका नाम श्रीमान भगवान दीन जी था। वह बहुत अच्छे सेवक थे। श्री साधु जी की संगत से बहुत लाभ उठाते थे। उन्होंने मेरी भी बहुत अच्छे भावों से सेवा की थी।

वह रेलवे के मुलाजिम थे और अच्छा वेतन पाते थे। मैं मुरादाबाद से चला आया। कुछ समय के बाद मुझे पता लगा कि शोक! ऐसे सेवक का देहान्त हो गया है। इस अकाल मृत्यु से एक नौजवान लड़की विधवा हो गई और छोटे-छोटे बच्चे यतीम हो गए। इस बात को सामने लाकर श्री साधु जी ने बड़ा सदमा खाया कि इस हालत में इस नौजवान विधवा और इतने छोटे बच्चों का क्या हाल होगा। उनका हृदय हिल गया। उन्होंने रेलवे वालों से मिलना और पत्र व्यवहार करना शुरू किया। और महीनों तक उसका सिलसिला जारी रहा। और फिर जो उनके Bonus के पैसे मिलते थे, वह किस प्रकार से उन बच्चों के नाम रहें, उसके फिकर और संग्राम में भी उन्हें कई जगह जाना और विविध लोगों से मिलना पड़ा। उसी विधवा और उसके बच्चों को लेकर वह मोगे पहुंचे, क्योंकि वह जानते थे, कि देव समाज के रक्षाकारी किले में ही इस विधवा की इज्ज़त सलामत है, छोटे बच्चों की रक्षा और पालना का सामान है। और उनके रुपयों की हिफाज़त है। बरसों तक इस परिवार की रक्षा का काम जारी रखा। इस तरह यह परिवार अपने पावों पर खड़ा होने के योग्य बन गया। उजड़े घरों को बसाने वाले भगवान देवात्मा के शिष्य होकर श्री साधु जी उजड़े घर बसाने वाले हो गए। इनकी हस्ती कैसी मुबारिक!

श्रीमान बख्शी रतन चन्द जी जौहर सेक्रेटरी देव समाज, को कौन नहीं जानता?सन् 1936 में उन्हें अचानक एक पांव में सख्त तकलीफ शुरू हो गई। इत्तफाक से इस अवसर पर श्री साधु जी सोलन तशरीफ ले आए। उनकी बढ़ती हुई तकलीफ को देख कर श्री साधु जी को यही सूझा कि शिमले के योग्य डाक्टरों का परामर्श लेना चाहिए। फौरन ही यह असाधारण साहस रखने वाले हमारे प्रिय सम्बन्धी श्री साधु जी श्रीमान बख्शी जी को उठाकर शिमले ले गए। जब शिमले के डाक्टरों ने यह कहा कि शायद टांग काटनी पड़े तब श्री साधु जी ने यही ठीक समझा कि पंजाब की राजधानी लाहौर में जो सबसे बड़ा हस्पताल है, जहां सब से ज्यादा बेहतर मदद मिल सकती है, वहां ले जाना चाहिए। वह श्रीमान बख्शी जी को बहुत बड़ी सावधानी से लाहौर ले आए और महीनों तक उनकी जान को बचाने के संग्राम में रात दिन एक कर दिया। आखिरकार उनके असाधारण संग्राम का यह फल हुआ, कि श्री बख्शी जी की कीमती जान बच गई। औरों की रक्षा, पालना और सेवा में जिस कदर साधु जी अपने आपको भूल जाते थे, वह दृश्य भी असाधारण है। इसी प्रकार मुरादाबाद के सेवक साहू बैजनाथ थे। वह एक बार सख्त बीमार हो गए। उनके यह सौभाग्य थे कि श्री साधु जी उनके पास थे। श्री साधु जी ने उनकी जो सेवा की, वह स्मरणीय थी। उनको उठाकर वह मेरठ ले गए। योग्य डाक्टरों से मिलकर उनका इलाज कराया। उनका पेशाब पखवाना उठाया। उनकी सेवा में रात दिन एक कर दिया। अचम्भे में डालने वाली बात यह थी कि श्री साधु जी खाते अपना थे और सेवा उनकी करते थे। साहू बैजनाथ जी ने कई बार रोकर उनसे कहा कि खाया तो आप मेरे साथ करें, लेकिन श्री साधु जी ने नहीं माना। और निष्काम सेवा का दृष्टान्त हम सब के सामने पेश किया। इस प्रकार के कई दृष्टान्त श्री साधु जी के जीवन से उत्पन्न हुए हैं। श्री साधु जी का जीवन कैसा हमदर्द और कैसा मुबारिक!

शुभ संग्राम

18.3.2014 रात 8 बजे – सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इस सभा में 40 से ऊपर जन शामिल थे। श्री सभापति जी ने बताया कि सब मनुष्य सुखों के प्रेमी हैं, इसी कारण वह अन्धकार ग्रस्त हैं। स्वाद सुख अनुराग, सुख के प्रति अन्धेरा पैदा करता है। एक नौजवान ने अज्ञानता के कारण केवल मिर्चें खाकर अपने यकृत (मेहदा) को खराब कर लिया। एक नौजवान ने शराब, मांस का अधिक सेवन करके डेढ़ कविंटल भार बढ़ा लिया। दोराहे से अप्रेशन करवा कर भार घटाने का यत्न किया। काम वासना, नशा वासना, स्वाद सुख की हानियों की बहुत सी उदाहरणें दी और हार्दिक अन्धकार का नकशा खींचा। इस आत्म अन्धकार के हर्ता भगवान देवात्मा हैं जो अधिकारी आत्माओं को अपनी मुबारक संगत के द्वारा देव ज्योति पहुंचाकर जीवन का सच्चा मार्ग दिखाते हैं।

19.3.2014, सुबह 9 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी:- सभापति जी ने बताया कि अच्छे बनने का नाम धर्म है। बुराईयों से बचे बिना कोई अच्छा नहीं बन सकता। अच्छे व्यवहारों से धर्मवान होने की पहचान है। पाप और मिथ्या से बचे बिना धर्मवान कोई नहीं बन सकता। अपने से निकलकर दूसरों की सेवा करना ही धर्म है। श्रीमान प्रेम कुमार जी का शुभ संगत द्वारा हुआ उच्च परिवर्तन सुनाया। श्रीमती सत्यवती जी सीकरी के सुन्दर जीवन के बहुत प्रभावदायक दृष्य पेश किए। एक अग्रेंज अफसर ने अपने पुत्र के कातिल को बहुत फिकर से बचाया। इस आदमी को फरिश्ता कहना ही उचित है। श्री सभापति जी ने बड़ा स्पष्ट समझाया कि श्रद्धा, शुकगुजारी, हमदर्दी आदि के उच्च भावों के बिना उच्च व्यवहार या सात्विक व्यवहार नहीं होता। दूसरों की सेवा में यह भाव काम करते हैं। इनकी प्राप्ति ही धर्म की प्राप्ति है।

8.30 बजे शाम सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:- सभापति जी ने बताया कि प्राय: सब धर्म मत ही यह विश्वास करते हैं कि मनुष्य का परम कर्तव्य परमात्मा को जानना और अराधना है। उसकी स्तुति बंदगी, प्रार्थना ही धर्म कारज हैं। पर देव धर्म जो कि परम पू० भगवान देवात्मा की महान कृपा का दान है, नेचर के नियमों पर अधारित शिक्षा है। जो क्रिया असम्भव है, वह किसी पूजा पाठ द्वारा सम्भव नहीं बनाई जा सकती। कई मिथ्या रीति रिवाजों के ऊपर रोशनी डाली गई, सेहत के लिए सैर, व्यायाम आदि के सब नियम हैं, उनका पालन करना अवश्यक है, शिक्षा प्राप्त करने के नियम हैं, सम्बन्धों में सुखी रहने के भी नियम हैं। दूरियां को नज़दीकियों में बदलने के नियम हैं। सम्बन्धों में कई दुर्घटनाओं से बच सकते हैं, यदि शुक्रगुज़ारी, सन्मान वा श्रद्धा और सहनशीलता के भाव हों।

इस ब्यान के बाद श्रीमान बलेदव सिंह जी ने बताया कि एक नौजवान जो, नया नया डाक्टर बना था, परन्तु किसी कारण अपने बाल कटवा दिए, पिता ने डांट डपट कर दी, उसने आत्मघात कर लिया। इसके बाद परिवारों को सुखमय बनाने वाली घटनाएं बताई जो प्रेरणादायक और प्रभावशाली थी। इस सभा में 50-60 के लगभग जन शामिल थे।

20.3.14 सुबह 9 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी:- श्रीमान जी ने बताया कि परम पू० भगवान देवात्मा की शरण को प्राप्त करना, इस दुनियां में सबसे बड़ा सौभाग्य है। दुनियां भर का राज्य भी इसके सामने तुच्छ है। इसको समझने के लिए जो हृदय की अवस्था होनी चाहिए वह अभी है नहीं। यदि

अपने से बड़े, योग्य, परोपकारी जन नज़र आने लग जाएं, उनके आगे दिल झुकने लग जाए, उन जैसा बनने की कुछ लालसा पैदा हो जाए, उनके कार्य में कुछ न कुछ सेवाकारी होने में भला नज़र आने लगे, तो कुछ समझ में आ सकता है। Emerson अंग्रेज ऐसे सुन्दर हृदय के मालिक थे, कहते हैं कि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसने मुझे कुछ न कुछ भला न बना दिया हो। एक सेवाकारी कैदी का ज़िकर किया, जो पैरोल पर आने पर भी सेवा के काम करता है। एक बज़ुरग सात्विक गुणधारी माता के गुणों का ब्यान किया। कई और गुणधारियों के महान गुणों का श्रद्धा भाव से वर्णन किया। इसके लिए श्रद्धा की आंख पैदा करने की अवश्यकता है, फिर दूसरी आंख का वर्णन किया जिसके द्वारा सेवा देखनी है, सेवाकारी के उपकार देखकर ऋणी अनुभव करना है, उनके ऋण उतारने का संग्राम करना है। इस शुक्रगुज़ारी के भाव द्वारा भी हृदय की अवस्था बनती है। एक पढ़ी लिखी लड़की के इस भाव का वर्णन किया, जिसने अपने अध्यापक (उपकारी) के ऋण को उतारने का यत्न किया।

20.3.2014 शाम 8.30 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी: - इस सभा में 50 के लगभग जन शामिल हुए। सभापति जी ने बताया कि आम जनता परमात्मा को मानती है, जिसका कोई अस्तित्व नहीं है। बाकी सम्बन्धों को मिथ्या या माया माना जाता है। कहलाने वाले धर्म मत इसी का प्रचार कर रहे हैं। परम पू० भगवान देवात्मा मिथ्या के शत्रु हैं। वह सम्बन्धों में उच्च व्यवहारों को ही धर्म मानते हैं। वह सब सम्बन्धों में श्रद्धा, सम्मान, कृतज्ञता, हमदर्दी और हानि परिशाध के भावों द्वारा उच्च गतियां करने में मनुष्यों को लगाकर उच्च मेल पैदा करते हैं, सच्चा स्वर्गिय प्रेम और एकता पैदा करते हैं। श्री सभापति जी ने कई अच्छे बेटे, भाई, सासों आदि के सुन्दर उदाहरण दिए, गुरू महाराज की सम्बन्ध तत्व की सुन्दर तस्वीर खींची।

21.3.2014, सुबह 9 बजे सभापति श्रीमान बलेदव सिंह जी: – सभापति जी ने बताया कि कोई व्यक्ति दुख, रोग, हानि, अपमान या मौत नहीं चाहता, पर दुनियां में कोई ही ऐसा इन्सान होगा जो यह कहे कि मैं हमेशा सुखी हूं या सन्तुष्ट हूं। हमें कौन चलाता है अर्थात् मेरे कौन से भाव मेरे परिचालक हैं। यह जानना अति ज़रूरी है। हमारे आन्तरिक भावों को उनके प्रकृत रूप में देखना अत्यन्त अवश्यक है। जैसे शारीरिक बिमारियां हैं वैसे आत्मिक रोग हैं। काम वासना के रोग से रोगी एक सेठ की बहुत शिक्षाप्रद कहानी बताई। धन अनुराग की एक स्त्री की हृदय विदारक घटना बताई। स्वाद वासना, अहंकार आदि नीच भावों की भयानक तस्वीर पर रोशनी डाली। आसा राम वा उसके बेटे, एक राजनैतिक नेता वा उसके बेटों की जेल जाने की घटना बताई। नीच अनुरागों के भयानक रूप का नक्शा खींचा। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी। एक जन ने सभा के अन्त में सबको केले बाटें और अपने भाव की तृप्ति की।

पदमपुर

21.3.2014, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने गुस्से के विनाशकारी प्रभावों के विषय में ब्यान किया। गुस्से से बहुत भयानक और घातक घटनाएं घटती हैं। अपने गुस्से को जानने के लिए पू० भगवान की ज्योति की अवश्यकता है। देव तेज इसका antidote है। महात्मा बुद्ध ने अपने गुस्से पर कैसे काबू किया। ऐसे प्रभावशाली दृष्टान्त दिए गए।

22.3.2014, सुबह 8.30 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी: - सभापति जी ने बताया कि मिथ्या धर्म मत ऐसे प्रलोभन देते हैं कि जिनका

अकर्षण मनुष्यों में होता है। यह आकर्षण ही हमारे आत्मिक रोग हैं, जो पू० भगवान की ज्योति में नज़र आते हैं। वह रूहानी शीशा है। धन अनुराग, नशा, स्वाद अनुराग मनुष्यों का कैसे नाश करते हैं, उसके उदाहरण दिए गए।

22.3.2014 शाम 8.30 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:- सभापति जी ने बताया कि हम जो भी काम करते हैं, अपने भावों से परिचालित होकर करते हैं। अधिकतर नीच भावों से परिचालित होते हैं, अच्छे भाव बहुत कमज़ोर होते हैं। नीच भावों द्वारा जैसे, स्वाद अनुराग, काम अनुराग, धन अनुरागों की बहुत सी घटनाएं बताई। श्रीमान बलेदव सिंह जी ने कंवर दविन्द्र सिंह जी, नौध सिंह जी आदि की शुक्रगुज़ारी की घटनाएं बताई।

23.03.2014, सुबह 9.00 बजे सभापति श्रीमान बलेदव सिंह जी। उन्होंने बताया कि पुराने ज़माने में germs की जानकारी नहीं थी, आज ईलाज वैज्ञानिक ढंग से होता है। धर्म भी अटकलपच्चू थे। पू० भगवान ने विज्ञान मूलक धर्म दिया है, इसका ज्ञान देता है कि नीच जीवन क्या है? उच्च जीवन क्या है? नीच भाव आत्मा के रोग हैं, उच्च भाव आत्मा की खुराक हैं। इन दोनों का ज्ञान गुरू महाराज देते हैं।

23.03.2014 शाम 4 बजे सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:- यह सभा श्रीमान राम किशन सिंह जी गेरा के घर में हुई। यह सभा माता पिता के सम्बन्ध में थी। सभा के आखिर में मिष्ठान दिया गया।

23.03.2014, शाम 8.30 बजे:- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी इस सभा में बताया गया कि देव धर्म दूसरे धर्मों से कैसे भिन्न है। कई जनों के उच्च परिवर्तन बताए गए। सुरीला जी ने बहुत सुन्दर भजन गाए। नीच जीवन की हानियों का वर्णन किया गया।

24.03.2014, सुबह 9 बजे:- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी:- सभापति जी ने बताया कि हर जन असर छोड़ता है। सुगन्ध, दुर्गन्ध, मिर्चों के असर हैं, इसी प्रकार मनुष्यों से असर निकलते हैं। अच्छे असरों में आकर पंडित नेतराम जी, श्रीमान नौध सिंह जी जैसी हस्तियों ने परिवर्तन प्राप्त किया। यह देव प्रभावों की करामात है।

23.3.2014, सुबह 8 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर जी:- उन्होंने बताया कि विकास के नियम में गुण को देखना भी एक नियम है। इससे हृदय नम्र होता है और मनुष्य को ऊपर उठाता है। उच्च जीवन पाने का भी यह नियम है। उच्च कार्य में अपना योगदान पाया जाए। सभापति जी ने अपने पिता और एक अध्यापिक के गुण बताए। माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी कुछ प्रभावशाली उदाहरण दिए।

25.3.2014, सुबह 9 बजे:- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी:- सभा में बताया कि ज्ञान और विश्वास के उपयोग का ही लाभ है। एक डाक्टर खुजली का ईलाज करता था, खुद खुजली का मरीज़ था, क्योंकि वह परहेज़ नहीं कर सकता था। अच्छे भावों के बिना धर्म नहीं मिलता। कृतज्ञता की आंख हमारे सम्बन्धों को मीठा बनाती है। दूसरों के उपकार कर्ज़े की न्यांई अनुभव हों, उपकारियों की सेवा करके सन्तुष्टि मिलती है। कई सुन्दर कृतज्ञता की उदाहरणों द्वारा उन्होंने विषय को स्पष्ट किया।

25.3.2014, शाम 8.30 बजे- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:- पहली बात हमारा जन्म माता पिता से हुआ है, दूसरा हमारा अस्तित्व शरीर और आत्मा से बना है। तीसरा जड़ और शक्ति परिवर्तनशील है, उसी प्रकार हमारा आत्मा भी परिवर्तनशील

बाकी शेष पेज 10 पर

क्या औरत होना अभिशाप है?

औरत के लिए अबला, दलित, पैर की जूती सम्बोधन पुरुष प्रधान समाज के अंहकार को दर्शाते हैं। 8 मार्च को Woman Day मनाया जाता है। कुछ संवेदन शील लोगों ने अनुभव किया कि औरतों के अधिकारों के प्रति, समाज को जागृत करने के लिए कुछ प्रयास होना चाहिए। यह प्रयास अच्छा है, परन्तु इससे समाज की मानसिकता नहीं बदली जा सकती। आज भी औरतें अनगिनत प्रकार के जुल्मों की शिकार हैं। अपने परिवार की आर्थिक कमजोरी, बच्चों का मोह शादी के बाद उन्हें जुल्म सहन करने के लिए विवश कर देता है। इस प्रकार की दर्दनाक जिन्दगी सहने के कारण अधिकतर स्त्रियां यही सोचती हैं कि औरत होना ही एक अभिशाप है। अपने दुखों को देखते हुए वह भ्रूण हत्या जैसे पाप के लिए भी तैयार हो जाती हैं, यह सोचकर कि आगे मेरी बेटी को भी इन्हीं दुखों से गुजरना पड़ेगा।

औरतों की ऐसी कृपा पात्र अवस्था होते हुए भी मैंने सदा यह अनुभव किया है कि न केवल औरत होना अभिशाप नहीं बल्कि नेचर का बहुत बड़ा वरदान है। औरत को नेचर ने जिन गुणों से भरपूर किया है, वह बहुत कम पुरुषों में मिलते है। जो सृजनकर्त्ता है, जो जननी है, उसका जन्म अभिशाप कैसे हो सकता है! यह स्त्री ही है, जिसने फलोरिंस नाईटिंगेल, भक्त पूर्ण सिंह, सरवण कुमार, महात्मा गांधी आदि और कितने महापुरुषों को जन्म दिया है और उनकी ऐसी परवरिश की है कि वह समाज के हित के लिए कुर्बान हो गए।

सबसे बढ़कर शत-शत प्रणाम है उस मां को, उस जननी को जिसने परम पूजनीय भगवान देवात्मा, अध्यात्मिक जगत के सूरज को जन्म दिया।

बच्चे को नौ महीने अपने पेट में रखकर अपने खून की एक-एक बूंद से सींचकर, कठिन पीड़ा में से गुजरकर जन्म देना एक औरत के ही भाग्य में है। वह नन्ही जान जब मां की गोद में आती है, तो उसकी खुशी को कोई माप नहीं सकता, उसको कितना गर्व होता है कि बच्चे के एक-एक अंग की सृजनकर्त्ता वह है। उस गर्व में एक औरत ही सब तरह के जुल्म सहने की सामर्थ्य रखती है।

औरत में गजब की सहन शीलता होती है, जो दुख और पीड़ा शारीरिक तौर पर भी वह सह सकती है, वह पुरुष सहन नहीं कर सकते। जो पूरी-पूरी रात जागकर बच्चे की परवरिश करती है, फिर दिन भर परिवार की जिम्मेवारियों को पूरा करती है, उसका 100वां भाग भी पुरुष नहीं कर सकते। कुर्बानी, त्याग जो स्त्री के लिए साधारण होता है उससे उसकी आत्मा कितनी सशक्त बनती है, वह पुरुषों के भाग्य में नहीं।

घर गृहस्थी चलाने के लिए औरत पुरुषों से कहीं बेहतर है। उसमें कुशल प्रबन्ध के गुण हैं। वह 200 रू० में भी घर चला सकती है और 20,000 रू में भी। यह गुण पुरुषों में बड़ी-बड़ी डिगरियों से

नहीं आता। इसलिए संस्थाओं के प्रबन्ध में भी औरतों का प्रबन्ध पुरुषों से बेहतर होता है। यही नहीं कि यह गुण पढ़ी लिखी औरतों में होता है। ग्रामीण महिलाएं भी इसमें निपुण होती हैं। वर्ष 2006 में 14 अविकसित देशों में हुए सर्वे में यह बात सामने आई कि जहां भी ग्रामीण महिलाओं को कृषि वा ग्रामीण संसाधनों के उपयोग में मुख्य भागीदारी दी गई, उन स्थानों पर गरीबी वा भुखमरी कम हुई है। क्योंकि स्त्रियों में परिवारों को खुशहाल बनाने का गुण है।

घर गृहस्थी का निपुणता से बोझ उठाती महिला आर्थिक तौर पर भी पुरुष की सहयोगी बन गई है। कठिन परिश्रम उसकी रग-रग में होता है। सबसे पहले जागना, सब की आवश्यकताओं को पूरा करना, नौकरी से आकर फिर सब को सन्तुष्ट रखना यह गुण महिला में ही हो सकते हैं। उन्हें सिखाने की जरूरत नहीं पड़ती। महिला को इस मेहनत से गुजारने के लिए नेचर ने भी उसकी जीवनी शक्ति को इतना मजबूत बनाया है कि वह जन्म से ही कमज़ोर होकर भी जीवित रह जाती है, परन्तु एक कमजोर लड़के को पालना डाक्टरों के लिए भी समस्या बन जाता है।

सहनशीलता का गुण स्वभाविक ही औरतों में आ जाता है। बेशक पुरुष उनकी सहनशीलता का अनुचित लाभ उठाकर कई बार उन्हें प्रताड़ित करते हैं, परन्तु फिर भी इस अमूल्य गुण की ध रोहर औरत के पास है।

साधारणत: और उन मोटे पापों से बची रहती है, जिनमें पुरुष डूबे दिखते हैं। पवित्रता उसका एक अमूल्य गहना है। कुछ गिणती को छोड़कर कोई स्त्री शादी के बाद पर पुरुष को कोई महत्व नहीं देती, परन्तु शादीशुदा पुरुषों के हाथों भी स्त्रियों की इज्जत सुरक्षित नहीं। मौका मिलने पर अच्छे चरित्रवान भी गिर जाते हैं।

इतने गुणों की मालिक औरत अबला कैसे हो सकती है? एक जननी, सृष्टि की रचनाकर्त्ता दलित कैसे हो सकती है। आवश्यकता है अपने गुणों को पहचानने की, अपने उचित अधिकारों को पाने की। सधारणत: बच्चे पिता की अपेक्षा मां को ही महत्त्व क्यों देते हैं, क्योंकि विधवा होकर भी एक मां छोटे से काम करके भी बच्चे पाल सकती है, परन्तु स्त्री का यदि देहान्त हो जाए तो पुरुष फौरन दूसरी शादी करके सौतेली मां की गोद में बच्चे डाल देते हैं, फिर वह उनके साथ कैसा व्यवहार करे, यह उनकी सिर दर्दी नहीं रहती। औरत कुर्बानी की मूर्ति है। इतने गुणों से सम्पन्न औरत परलोक में शायद इन्साफ पा सके क्योंकि वहां पर विधान पुरुष के हाथ में नहीं।

हर महिला का यह कर्त्तव्य है कि वह न केवल अपने गुणों को और निखारे बल्कि अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की सामर्थ्य पैदा करे, तो औरत होना अभिशाप नहीं बल्कि वरदान है।

सुरजीत बराड़

Published on 5th of the month
20
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

नींद से पहले करें आत्म–विश्लेषण

रुपए पैसे का हानि–लाभ आसानी से आंका जा सकता है। नफे–नुकसान की भरपाई भी आसान है। किंतु यदि जीवन का हानि–लाभ बिना ऑडिट के रह जाए तो फिर नेचर के ऑडिट में हमें तकलीफ होगी। इसलिए एक डेली ऑडिट चार्ट बनाना चाहिए। ऑडिट हानि–लाभ का नहीं, सही रास्तों का करिए। रात को सोने के पहले ऑडिट करें कि अपने काम के दौरान हमने जो रास्ते अपनाए वे कितने सही या गलत थे। प्रतिष्ठा को बचाने के लिए कब–कब चरित्र को दांव पर लगाया। ध न के लिए किस–किस का शोषण किया। झूठ को कितनी बार शस्त्र बनाया। किस–किस के साथ छल किया। ईमानदारी से इसका ऑडिट करें। ध्यान रखिएगा आप करें या न करें, नेचर कर ही रही है। देखिए, मन सबसे अधिक बेईमान होता है। इसलिए अपना ऑडिट रात को सोने से पहले ही करिए, जब मन की गति कम होती है। असल में रात को सोने के पहले एक वक्त ऐसा आता है जब आप अपने भीतर का कंपन महसूस कर सकते हैं। जैसे भारी वाहन पास में से गुजर जाए तो धरती का कंपन हमारे शरीर में भी उतर जाता है। सोने से पहले सीधे खड़े हो जाएं। दोनों हाथ जोड़ लें। पैर इतने चिपका लें जैसे शरीर एक है। सारा ध्यान उत्सर्जन इंद्रियों पर यानी मूलाधार चक्र पर टिका दें और दिनभर की गतिविधियों को फिल्म की तरह देखें। पांच मिनट भी काफी होंगे। शुरूआत एक कंपन से होगी और धीरे धीरे आप स्थिर होने लगेंगे। इसके बाद सो जाएं कुछ दिनों बाद अपने आप ऑडिट होने लगेगा और आप स्वयं को सही मार्ग पर पाएंगे।

पं० विजयशंकर मेहता

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–देव–धर्म–मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts